Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

Original Article

डॉ. अम्बेदकर के सामाजिक चिंतन की तत्व समीक्षा

प्रो. (डॉ.) विजय रजक
प्राचार्य,
रामलखन सिंह यादव कॉलेज, औरंगाबाद, बिहार

Manuscript ID: yrj-140403

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 4
Oct-Nov-Dec.- 2025
Pp. 21 - 25

Submitted: 9 Oct. 2025
Revised: 21 Oct. 2025
Accepted: 20 Nov. 2025
Published: 10 Dec. 2025

Corresponding Author:
प्रो. (डॉ.) विजय रजक

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.20772826

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.20772826

Creative Commons

OPEN ACCESS

21 वीं शताब्दी में भारतीय समाज के नए निर्माण और विकास के लिए कुछ दिनों पूर्व से ही प्रयत्न जारी है। भारत इसके लिए जहाँ उदारवादी अर्थ व्यवस्था का सहारा ले रखा है, वहीं नवीन सांस्कृतिक जीवन शैली को भी अपना रहा है। इस सामाजिक विकास धारा का बड़े पैमाने पर विरोध हो रहा है, वहीं कई लोग समर्थन भी कर रहे हैं। समर्थन और विरोध की दो धूरियों के बीच से एक तीसरी धूरी भी विकास और निर्माण में अपनी अहम् एवं सक्षम भूमिका निभा सकती है ऐसा अधिकांश विद्वानों का मत है। इस अवधारणा को मजबूती प्रदान करने के लिए अम्बेदकर के सामाजिक विकास की अवधारणा और उनके तत्वों को अध्ययन तीसरा धारा के समाज निर्माण के नीतियों को शक्ति प्रदान कर सकती है। इस वास्ते मैंने डॉ. अम्बेदकर के सामाजिक चिंतन की तत्व समीक्षा आवश्यक ही नहीं वरन, अनिवार्य समझा, जिसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*
How to cite this article:
प्रो. (डॉ.) विजय रजक (2025). डॉ. अम्बेदकर के सामाजिक चिंतन की तत्व समीक्षा. Young Researcher, 14(4), 21 – 25.
https://doi.org/10.5281/zenodo.20772826

डॉ. अम्बेदकर के सामाजिक चिंतन का पहला तत्व है अनीश्वरवाद। उन्होंने जगत् के स्पष्टा व पालनकर्त्ता के रूप में किसी ईश्वर, प्रजापति, ब्रह्मा और परमेश्वर को नहीं माना। उन्होंने सृष्टिवाद का खण्डन किया और माना कि जगत अनादि और अनन्त है। उसकी उत्पति तथा सृष्टि की व्याख्या असंभव है। डॉ. अम्बेदकर का मानना है कि कोई यह सिद्ध नहीं कर सकता है कि ईश्वर ने जगत की

सृष्टि की है। जगत का विकास हुआ है, न कि दृष्टि उन्होंने कहा कि ईश्वर की मान्यता अंधविश्वास, पुरोहित, धर्मान्धता, अर्कमन्यता, हवन, यज्ञ, बलि आदि की जननी है, जिनसे मानव कल्याण सम्भव नहीं है। इस प्रकार डॉ. अम्बेदकर ने ईश्वरवाद से जुड़े ब्रह्मावाद, अद्वैतवाद, अवतार वाद, सृष्टिवाद आदि विचारों को स्वीकार नहीं किया।

उनका द्वितीय तत्व है अनात्मवाद। डॉ. अम्बेदकर ने अजर अमर आत्मा के अस्तित्व को कभी भी नहीं माना, क्योंकि ईश्वर की भाँति नित्य आत्मा भी अज्ञात एवं अदृश्य है। अर्थ क्रिया कारित्व भी दृष्टि से आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि वह किसी कार्य को सम्पन्न नहीं करती। डॉ. अम्बेदकर ने चित मन और विज्ञान को स्वीकार है। मन आत्मा नहीं है और न मन शरीर है पर मन के वह आश्रित अवश्य है मन और शरीर एक दूसरे पर आश्रित हैं। उन्होंने आत्मा को नहीं माना, इसलिए परमात्मा को भी नहीं माना।

डॉ. अम्बेदकर का तृतीय मूल तत्व है नैतिक विश्व-व्यवस्था में अटूट आस्था। उन्होंने ईश्वर नित्य आत्मा, अवतारा वाद, स्वर्ग, नरक, हवन-यज्ञ, बलि आदि को नहीं माना किन्तु विश्व की नैतिक व्यवस्था को स्वीकार किया, जो ईश्वर अथवा अदृश्वाद के आधार पर नहीं अपितु स्वयं मानव-प्राणियों के कुशल-कम्मों (कर्मों) से कायम रहती है। यदि मानव शुभ-अच्छे कर्म करेंगे, तो नैतिक व्यवस्था अच्छी रहेगी। यदि वे अशुभ (बुरे) कर्म करेंगे तो विश्व व्यवस्था बुरी होगी।

उन्होंने अपने सामाजिक चिंतन के चौथे तत्व के रूप में कर्म प्रधान को माना। यह कर्मवाद ऊपर के तीनों तत्वों से अन्तः सम्बंधित है। डॉ. अम्बेदकर की मान्यता है कि कर्म का सीधा सम्बन्ध दूसरे जन्म से है। कर्म के संस्कारों का प्रभाव वर्तमान व्यवस्था पर पड़ता है। कर्मों को कोई बाह्य सत्ता नियंत्रित नहीं करती और न हीं कोई नित्य आत्मा उन संस्कारों को भावी जीवन में ले जाती है। डॉ. अम्बेदकर ने कर्म और आत्मा के आवागमन को स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार आदमी अपने कर्मों का स्वामी और उत्तरदायी दोनों है। अतः, कर्मों से ही उसकी स्थिति है।

अम्बेदकर के नीतियों का पाँचवाँ मूलाधार है, वर्ण व्यवस्था, जाति-प्रथा और अस्पृश्यता का उन्मूलन। उन्होंने वर्ण व्यवस्था को किसी दृष्टि से अथवा किसी भी रूप में नहीं स्वीकारा, क्योंकि यह सामाजिक व्यवस्था अन्यायपूर्ण है, जो असमानता, आर्थिक शोषण, सामाजिक उत्पीड़न धार्मिक भेद-भाव, राजनैतिक भ्रष्टता आदि पर आधारित है वर्ण-व्यवस्था ने जाति प्रथा और छुआ-छूत को जन्म दिया है, मानव को पशुओं के समान बना दिया है और सम्पूर्ण समुदाय को नारकीय पतनाव्यवस्था में ढकेल दिया है। उन्होंने कहा है कि वह वर्ण-व्यवस्था न तो ईश्वरीय है और न ही स्वाभाविक है।

बाबा साहब के षष्टम मूल-क्षेत्र है मानववाद, जो सभी प्रकार के चमत्कारित विचार, रहस्यवाद, परलोकवाद, मोक्षवाद, ईश्वर वाद, आत्मवाद, अवतारवाद आदि से परे, विशुद्धतः उस

आदमी में अटूट आस्था रखता है, जिसका अस्तित्व समाज में है और अपनी स्थितिबोध तथा समस्याओं से जुझ रहा है। मनुष्य प्रकृति का विलक्षण प्रतिनिधि है, जिसमें सृजनात्मकता की भावना अपार मात्रा में विद्यमान है। वह अपनी क्रियाशीलता से समाज को समृद्ध बनाता है, भौतिक सुख- शांति के साथ-साथ मूल्यों का साम्रज्य स्थापित करता है। मनुष्य मूल्यों का स्त्रष्टा है।

उनका सप्तम मंत्र है, समाजवादी समाज का निर्माण। उनके सामाजिक समाज की अवधारणा त्रयी सिद्धान्त में अन्तर्निहित है। उसका आधार है, समता स्वतंत्रता और भ्रातृत्व। डॉ. अम्बेदकर के समाजवादी समाज की संरचना का एक पक्ष है, जिसके संरचनात्मक पक्ष कहते हैं और दूसरा है नैतिक मानदण्ड पक्ष।

वे समाज में असमानता, वर्ण-भेद, जाति भेद, छुआछुत, ऊँच-नीच, दरिद्रता, शोषण, दुःख आदि की अकुशल कर्मों से प्रति उत्पन्न मानते हैं। वे समाज में रहने वाले सभी मानव-प्राणियों को समाज में समता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व के अनुकूल वातावरण पैदा करने के लिए प्रेरित करते हैं।

डॉ. अम्बेदकर की अष्टम मूल मंत्र है सामाजिक प्रजातंत्र, जो न केवल एक राजनैतिक आदर्श है अपितु सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार है। राजनैतिक दृष्टि से उनका एक ओर व्यस्क मताधिकार, एकमत-एक व्यक्ति, एक आदमी-एक मूल्य, कानून का शासन, संसदीय प्रणाली, सम्वैधानिक सम्प्रभुता आदि में विश्वास है तो दूसरी ओर राज्य समाजवाद के महत्व को स्वीकार करते हैं, क्योंकि भारत में आम जनता की सामाजिक और आर्थिक दशा सुधारने के लिए सरकारी तंत्र के सद्पयोग की अति आवश्यक है। उनका मानना था कि प्रजातंत्र न केवल एक राजनैतिक व्यवस्था है, वरन् एक सामाजिक जीवन पद्धति भी है, जिसका समता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व के आधार पर नियमन करना एक संवैधानिक अनिवार्यता है।

उनका नवम् मूल मंत्र है, राज्य का वह केन्द्रीय स्वरूप जो अपने दायित्व का पूर्णतः निर्वाह करे। डॉ0 अम्बेदकर राज्य की भूमिका को जन साधारण की सुख-शांति आर्थिक खुशहाली और सामाजिक व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। लेकिन डॉ. अम्बेदकर किसी प्रकार के राम-राज्य या ग्राम राज्य के पक्षधर नहीं थे। वह तो राज्य को धर्मनिरपेक्ष मानते थे, जिनका सीधा अर्थ है, राज्य की संसद राज्य के नागरिकों पर किसी धर्म विशेष को कानून द्वारा थोपेगी, भले कोई नागरिक अपनी धार्मिक स्वतंत्रता का प्रयोग करते हुए किसी भी धर्म को अंगीकार कर और कानून के अन्तर्गत अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करें। वह धर्म राज्य जैसे हिन्दु राज्य या 'मुस्लिम राज्य' को कतई नहीं चाहते थे।

डॉ. अम्बेदकर को दो नयी सिद्धान्त हैं-एक सिद्धान्त, समता और भ्रातृत्व, जिसका पूर्व में उल्लेख हो चुका है, दूसरा त्रयी सिद्धान्त है, बुद्ध, धम्म तथा संघ। इसके अतिरिक्त उनका तीसरा त्रयी सिद्धान्त है-शिक्षा, संगठन और संघर्ष। उन्होंने श्रमजनों से कहा कि शिक्षित बनों, संगठित बनों और

संघर्ष करो। उनका यही त्रयी सिद्धान्त दलितों और वंचितों को अपना वास्तविक हक दिलानें में समर्थ है। वह सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा अर्थात् सिविल नाफरमानी के पक्ष में न थे।

बाबा साहब का दसवाँ मूल-मंत्र है, मानवीय अधिकारों को पूर्ण समर्थन करना। अछूत शूद्रों को पढ़ने-लिखने, घूमने-फिरने, धन सम्पति रखने, अच्छे आवासों में रहने आदि के अधिकार पूर्व में प्राप्त नहीं थे। उनकी छाया तथा आवाज सर्वण लोगों को दूषित कर देती थी। उनका स्पर्श महापाप माना जाता था। उन्हें यह एहसास नहीं था कि वे मानव हैं, उनके लिए मानव गरिमा तथा गौरव की बात असम्भव थी। इन्हीं लोगों के मान-सम्मान, शिक्षा-दीक्षा, गरिमा-गौरव के खातिर डॉ0 साहब ने हिन्दू समाज के कट्टर वादियों से जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। वे चाहते थे, मानव को समस्त अधिकार प्राप्त हो।

उनका ग्यारहवाँ मूल तत्व है जीवन में धर्म की अनिवार्यता। मानव जीवन के लिए धर्म उतना ही अनिवार्य है जितना हवा और पानी। वैसे डॉ. साहब धर्म राज्य की धारणा को स्वीकार नहीं करते, पर राज्य की दायित्व सौंपा वह नागरिकों की धार्मिक स्वतंत्रता की सुरक्षा करे, ताकि सभी नागरिक अपने-अपने धर्मनुसार जीवन यापन कर सके। उनकी मान्यता थी कि सभी धर्म-समान नहीं है। इसलिए हर नागरिक को यह स्वतंत्रता हो कि वह अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म या मजहब को अंगीकार करे। डॉ. अम्बेदकर की दृष्टि में धर्म वह है जो धारण करने योग्य हो।

डॉ. भीमराव अम्बेदकर का बारहवीं मूल मंत्र है- अम्बेदकरवाद का आन्दोलनकारी स्वरूप। वह मात्र विचारधारा नहीं है अपितु स्वयं एक आन्दोलन है, जो एक विशिष्ट दर्शन और समरूप क्रिया में अन्तर्निहित हैं अम्बेदकरवाद का ज्ञान होने से व्यक्ति केवल उनके दर्शन से ही अभिभूत नहीं होता वरन् समरूप काम करने के लिए स्वप्रेरित एवं उत्साहित हो जाता है। उनका विरोध भी होता है, परन्तु वे चिन्ता नहीं करते और न ही प्रतिक्रियावादी तत्वों के समक्ष झुकते हैं। अम्बेदकर वाद को पढ़ने का मतलब है अपने विचार और कर्तृत्व में आन्दोलित हो जाना और निर्धारित मार्ग पर आगे बढ़ते रहना।

डॉ. अम्बेदकर का तेरहवाँ मूल मंत्र है सामाजिक न्याय। सामाजिक न्याय आदमी को आर्थिक सम्पन्नता, जन्म धारित प्रतिष्ठा और धार्मिक पहचान से मूल्यांकित नहीं करता वरन् उसके प्रति मान-सम्मान और भ्रातृत्व की भावनाओं की भी प्रवृति और उनके द्वारा अन्य के प्रति भी वैसी ही भावना से आंकना सिखाता है।

वैसे डॉ. अम्बेदकर ने सामाजिक न्याय के आर्थिक शैक्षणिक, राजनीतिक तथा धार्मिक पक्षों को भी महत्व दिया है पर सर्वाधिक महत्व भ्रातृत्व भाव को दिया है जो सभी लोगों में समता और समृद्धि को प्रकृति पैदा करता है। ऐसा सामाजिक न्याय वर्ण व्यवस्था, रामराज्य आदि में सम्भव नहीं

है। उन्होंने रामराज्य या वर्ण-व्यवस्था की अवधारणा को बिल्कुल अस्वीकार कर दिया है, क्योंकि इसमें असमानता और दूर्भावना अन्तर्निहित है जिसके कारण करोड़ों लोग अछूत- शुद्र और नीच पतित बन गए अम्बेदकर की सामाजिक न्याय की अवधारणा स्वतंत्रता, समता और भ्रातत्व में अन्तर्निहित है।

डॉ. अम्बेदकर के सामाजिक चिंतन का चौदहवीं और अन्तिम मंत्र है विश्व शांति उनका त्रयी- दर्शन, बुद्ध के प्रति अटूट आस्था, राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर समस्त मानव को सुख- शांति का संदेश देता है। उसमें मजहबी इन्सानों का भेदभाव रंग-भेद, जातिभेद, प्रादेशिक अलगाव, राष्ट्रीय कट्टरता, धर्मान्धता और साम्प्रदायिकता का कोई महत्व नहीं है।

उपर्युक्त सामाजिक चिंतन के तत्वों को देखने समझने से ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ. अम्बेदकर न केवल दार्शनिक तथा चिंतक थे, अपितु श्रेष्ठ आचरण वान भी थे।

''नमो तस्य भगवतो अरहतो सम्मा सम बुद्धस्य''

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेदकर: सम्पूर्ण वाड्.मय, खण्ड 3, (भारत सरकार नई दिल्ली)
2. व्हाट कांग्रेस एण्ड गाँधी हैव डन टू द अण्टचेविल्स (1946)
3. व्हाट कांग्रेस एण्ड गाँधी हैव डन टू द अण्टचेविल्स (1946) पृष्ठ 288
4. व्हाट कांग्रेस एण्ड गाँधी हैव डन टू द अण्टचेविल्स (1946) पृष्ठ 295-297
5. पृष्ठ 306-307 (यंग इंडिया, अक्टूबर 6, 1921)
6. पृ. 302-303 (वर्ण व्यवस्था) डॉ. मुन्द्रिका प्र. नायक अग्रलेख-2001
7. पृ.-96, बुद्ध की चिंतन धाराः कल और आज डॉ. नायक/डॉ. रजक
8. पृ. 1-7 इक्कीसवीं सदी में अम्बेदकर वाद, रघुवीर सिंह
9. पृ. 125-128, अम्बेदकर वादी आंदोलन दशा और दिशा (जय प्रकाश कर्दम)
10. पृ. 223-225 डॉ0 अम्बेदकर व्यक्तित्व और कर्तव्य (डॉ. डी. आर. जाटव)
11. पृ. 56-57 डॉ0 अम्बेदकर और दलित चेतना (रघुवीर सिंह)
12. पृ. 61-63, डॉ0 अम्बेदकर एक पुर्न मूल्यांकन, केवल भारती, रामपुर
13. पृ. 23-25 अर्थशास्त्र मार्क्स से आगे – डॉ. राम मलोहर लोहिया
14. पृ. 160-168, गाँधी, लोहिया और अम्बेदकर (डॉ. आर. जाटव)
15. 102 वां अंक - शोषित साप्ताहिक, पटना (सम्पादक-प्रो. जयराम प्र. सिंह)
16. 6 ठा विशेषांक-नया सवेर, टिकारी, सम्पादक-डॉ. मनोज कुमार मजबूर
17. डॉ. अम्बेदकर: एक समाज लोकत्रंतीय अध्ययन-जी. एम. लोखण्डे